Article - 2

My First Motivational Success Story - वापसी

सारिका पाक्षिक

वर्ष 23 अंक 336

और भुलाये न बने (1-15 जुलाई, 1983)

पिछली शिवरात्रि की बात है.... गोदौलिया से अस्सी आने के लिये रिक्शा खोज रहा था... तभी बगल में आकर एक रिक्शा रुका जिस पर एक वृद्ध पंडित जी अकेले बैठे हुए थे। पूछने पर पता चला कि अस्सी घाट जा रहे थे। निवेदन करने पर मुझे भी बैठने की अनुमति दे दी। उसके बाद अनायास ही बातों का जो सिलसिला चला, वह कभी भुलाये नहीं भूलता... और जब भी मौका पाता हूँ, उसे सुनाने से नहीं चूकता।

थोड़ी दूर चलने के बाद पंडितजी ने पूछा, "बेटे, गंगा नहाने जा रहे हो क्या?....." मैंने कहा, "नहीं ऐसे ही कुछ किताबें खरीदने आया था..... अब वापस जा रहा हूँ।" फिर मुझे मालूम नहीं क्या सूझा, मैंने पूछ लिया, "बाबाजी आप लग रहा है... गंगा नहाने ही आये हैं?"

उन्होंने कहा, "हां"।

".....बाबाजी, आप पूजा–पाठ भी करते होंगे..... आप एक सवाल का जबाव देंगे?"

"बोलो... क्या सवाल है...?"

"आपको पूजा–पाठ.... स्नान.....ध्यान से क्या मिलता है?"

"अरे बेटे! तुम ऐसा सवाल कर रहे हो कि.... अच्छा सुनो..... मुझे शांति मिलती है।"

"ठीक है, बाबाजी, आपको शांति मिल जाती है। यह तो बहुत ही ऊँची उपलब्धि है..... लेकिन क्या आप सोचते हैं कि आपकी तरह पूजा–पाठ करने वाले लोगों में से मुट्ठी भर भी वह चैन पा लेते हैं.... जैसी आपको अनुभूति हुई

है.... मुझे तो ऐसा नहीं लगता..... सब लोग तमाम स्नान–ध्यान के बावजूद कई तरह की परेशानियों से त्रस्त लगते हैं....."

"अरे बेटे! तुम रोज दस–बारह घंटे काम–धाम के लिये व्यतीत कर सकते हो.... और आधे घंटे ईश्वर की आराधना नहीं कर सकते....."

"बाबाजी.... ऐसी बात नहीं है.... यही तो मेरा सवाल है..... माना कि आपको शांति मिल जाती है..... पर आप उन तमाम लोगों के बारे में सोचिए..... जिन्हें हर रोज दस बारह घंटे किसी न किसी तरह का कठिन श्रम करना पड़ता है.... तब जाकर वे मुश्किल से अपनी जीविका चला पा रहे हैं..... क्या आज की... इस तंग जिंदगी को जीने वाले आदमी को..... आधे घंटे ही नहीं..... घंटे–दो घंटे की आराधना भी चैन दे पाती है?.....नहीं..... हकीकत में ऐसा नहीं दिखाई देता....."

"बेटा..... लेकिन मुझे तो....."

"बाबाजी ..... अपनी बात छोड़िये, आप जी ही कहां रहे हैं..... आप तो जीवन–संग्राम से भागने वालों में से..... आपने तो सब कुछ तज कर संन्यास ले लिया है..... फिर आपके लिये कैसी..... अशांति..... और कैसी शांति..... जरा लड़ाई में कूद कर तो देखिये....."

मालूम नहीं मुझे क्या हो गया था..... मैं किस आवेश में यह सब कह गया था..... इसके बाद पंडित जी के चेहरे के बदलते रंग..... एवं स्तब्ध खामोशी ने..... मेरे दिल को कचोट सा डाला..... मुझे लगा..... मैंने अकारण ही उनकी आस्था पर आघात करके उनके दिल को दुखी कर दिया.....अतएव माफी मांगने के प्रयास में मैंने कहा, "बाबाजी, बुरा मत मानिएगा.... मालूम नहीं.... क्या.....क्या आप से बक डाला..... ।"

तब तक रिक्शा अस्सी पहुंच चुका था..... मैंने रिक्शेवाले को रोककर कहा, "बाबाजी..... अस्सी आ गया..... चलिए आपको अस्सी घाट पहुंचा दूं....."

उस वृद्ध बाबा की आंखे सजल हो चलीं थीं..... और रुंधे गले से उस वृद्ध ने मुझसे विदा लेते हुए आखिर में कहा था, "बेटे..... मैं वापस जा रहा हूँ..... मुझे अब गंगा में नहाने की कोई इच्छा नहीं रह गयी है..... तुम्हारी इस छोटी–सी मुलाकात ने..... वर्षों के मेरे..... मिथ्या विश्वास को डगमगा दिया है..... बेटे.....आज अंतिम समय में तुमने मुझे..... बचा लिया..... अब मैं वापस अपने गांव..... अपने बच्चों के पास जाऊँगा..... जिनसे तंग आकर मैं संन्यासी बन गया था..... बेटे खुश रहो।"

-X-X-X-